ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 8, August 2022

''शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन : का एक अध्ययन'' (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)

आनन्द कुमार साहू

Government Girls College, Satna, Madhya Pradesh, India

सारांश

परिवर्तन शाश्वत सत्य एवं सनातन है। प्रकृति में परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर क्रियाशील रहती है, जड़ता प्रकृति के विपरीत है और गत्यात्मकता अनुकूल। पृथ्वी, सूर्य और चॉद तारे सब कुछ परिवर्तन का ही परिणाम है। भूगोलवेत्ताओं का मत है कि सर्वप्रथम संपूर्ण ब्रह्माण्ड एक पिण्ड था, जो प्राकृतिक परिवर्तनों के कारण पिघलकर टुकड़ों के रूप में विभिन्न ग्रहों के रूप में प्रकट हुआ। समाज इसी परिवर्तनशील जगत का अंश है इसीलिए समाज भी एक गत्यात्मक संख्या है और उसमें परिवर्तन उसकी गत्यात्मकता का ही परिणाम है। आदिम युग या आखेट युग से विकसित होता हुआ मानव समाज आज औद्योगिक एवं वैज्ञानिक युग तक आ पहुँचा है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास ने परिवर्तन को प्रक्रिया को और गति प्रदान की है। तीव्रगति से परिवर्तन हो रहे मानव समाज के प्रत्येक पक्ष में यथा–शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। इन परिवर्तनों के मूल में निश्चित रूप से शिक्षा का योगदान समाहित है, क्योंकि शिक्षा सामाजिक परिवर्तनों की वाहक है। एक ओर जहॉ शिक्षा ने सामाजिक परिवर्तनों में योगदान किया है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा में परिवर्तनों को सामाजिक परिवर्तनों की गति दी है। फलतः शिक्षा का रूप बदला है, उसमें नवीन आयामों, नवीन पक्षों और नवीन विचारधाराओं को सम्मिलित किया गया है।

Keywords:सामाजिक, शिक्षा, परिवर्तन, शैक्षणिक, विकास आदि।

प्रस्तावना :–

मनुष्य के पारस्परिक संबंध से समाज बनता है। समाज निरंतर गतिशील है। यही गतिशीलता उसमें नवीन परिवर्तन लाती है। मनुष्य की जिज्ञासावृत्ति ने उसे शिक्षा से जोड़ा, जो जीवन में विविध आयाम को जन्म देती है। समाज में हाने वाले परिवर्तन को शिक्षा के द्वारा आत्मसात किया जाता है। वहीं शिक्षा का प्रभाव सामाजिक परिवर्तन को जन्म देता है अर्थात् समाज में रहने वाले निवासियों के जीवन पर वह प्रभाव डालता है। जिस प्रकार अच्छी फसलों को प्राप्त करने में जमीन की उर्वरता होना आवश्यक है, उसी प्रकार समाज में श्रेष्ठ संस्कारित, अनुशासित पीढ़ी से समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। अध्ययन हेतु प्रयास एक निश्चित विधि के अनुसार होने से भावी जीवन का निर्माण संभव है। किसी भी देश की संस्कृति एवं सभ्यता के ज्ञान को पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित करने का एक सशक्त माध्यम शिक्षा है। शिक्षण संस्थाऐं समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। समाज में घटित परिवर्तन का प्रभाव शिक्षा पर परिलक्षित होता है, तो दूसरी ओर शिक्षा में किया गया बदलाव समाज को प्रभावित करता है। भारतीय समाज में शिक्षा का प्रभाव दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में निवासियों का शहरों की ओर रूझान, शिक्षा के कारण हुआ है। भारतीय समाज में संयुक्त परिवारों का विघटन, अनुवांशिक व्यवसाय की निर्भरता से समाप्त होकर आधुनिक शिक्षा ग्रहण की ओर बढ़ा है। शिक्षा स्वावलंबन का पाठ पढ़ाती है, जो आज महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। आज स्त्री शिक्षा भी अपने अहम् मोड़ पर है। उच्च शिक्षण संस्थाओं में हर वर्ग, हर धर्म की भागीदारी दिखाई दे रही है।

समाज में निरंतर गतिशीलता बनीं रहती है, जो परिवर्तन की ओर इंगित करती है। यह परिवर्तन वातावरण और अवसरों की उपलब्धि से होता है, जिसमें व्यक्ति अपना जीवन श्रेष्ठ प्रकार से व्यतीत कर सके। मानव, समाज में स्वयं को विचारों और कार्यों के माध्यम से व्यक्त करता है। मनुष्य एकाकी जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। उसके भीतर सामाजिकता की सहज प्रवृत्ति होती है। समाज के सामाजिक नियम शिक्षा के द्वारा ग्रहण किये जाते हैं। सामाजिक जीवन अधिकार और कर्तव्य के सिद्धान्त पर आधारित है। सामाजिक नैतिकता की यह पूर्व मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुरूप कार्य करने के लिए तब तक स्वतंत्र है जब तक उसके कार्य दूसरों की स्वतंत्रता में बाधक न हो। व्यक्ति का व्यक्ति से साधारण सम्बंध उसे सामाजिक जीवन जीने के लिये प्रेरित करता है। शिक्षा प्राप्त मनुष्य समाज द्वारा उपलब्ध अवसर और नागरिक सुविधा उसे लक्ष्य की ओर ले जाते हैं। सामाजिक परिवर्तन की गति सतत् प्रक्रिया है। शिक्षण संस्थाओं के द्वारा जो अनुशासित, दृढ़–निश्चयी, मूल्यपरक दृष्टि, यथार्थवादी विद्यार्थी तैयार किये जाते हैं, वे ही समाज में भिन्न–भिन्न पदों पर आसीन होते हैं और अपनी विशिष्ट कार्यशैली से

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 8, August 2022

समाज में परिवर्तन को जन्म देते हैं। शिक्षा की विविध विधाऐं, योग्य, निपुण, दक्ष विद्यार्थियों को समाज में स्थापित करती है। समाज के परम्परागत शाश्वत मूल्य भी विरासत के रूप में पुनः समाज में लौट आते हैं। शिक्षा अर्जित किया मनुष्य, समाज में कुरीतियों में बदलाव लाना चाहता है। पर्यावरण को संरक्षित रखना चाहता है। आज समाज में प्राथमिक शिक्षा से आगे बढ़ते हुए उच्च शिक्षा के विभिन्न सोपानों को पार करने की अलख जगी है। डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, ''शिक्षा परितर्वन का साधन है। जो कार्य साधारण समाजों में परिवार, धर्म और सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं द्वारा किया जाता था, यह आज शिक्षा संस्थाओं द्वारा किया जाता है।'' इस प्रकार शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की सूत्रधार है। यह सामाजिक परिवर्तन विकास का द्योतक है। इससे सामाजिक ढॉचे में परितर्वन आता है। समाज में होने वाले विभिन्न परिवर्तन चाहे वे जनसंख्या से संबंधित हो या तकनीकी विकास से संबंधित हो, शिक्षा का दखल प्रत्येक क्षेत्र में होता है। बढ़ती शिक्षा आज एकल परिवार प्रणाली तथा सीमित परिवार की ओर अग्रसर है। शिक्षा जहॉ एक ओर सामाजिक परिवर्तन की कारक है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक परिवर्तन को ग्रहण करता है। शिक्षा द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जब समाज में परिवर्तन होता है तो उसका समावेश शिक्षा में किया जाता है जैसे–दहेज प्रथा के दुष्परिणाम, आतंकवाद के दुष्परिणाम, बाल–विवाह का प्रभाव, गरीबी, अशिक्षा, मूल्यवृद्धि, भ्रष्टाचार, भिक्षावृत्ति, साम्प्रदायिकता, बाल–अपराध, वैश्यावृत्ति, बेरोजगारी, एड्स, परिवार, विवाह, नैतिक मूल्य, नगरीकरण, औद्योगीकरण, राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता आदि। समाज को प्रभावित करने वाले ऐसे कारकों का अध्ययन शिक्षा में समावेशित कर किया जाता है, ताकि भावी पीढ़ी समाज में हो रहे परिवर्तन को समझ सके। विद्यार्थी और समाज के बीच कड़ी का कार्य शिक्षक करता है, जो वैचारिक उदारता के साथ समस्त विद्यार्थियों को एक समान शिक्षा प्रदान करता है। भावी नागरिक में समाज की प्रगति के बीज बोता है। उन्हें वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करता है। समाज में आने वाले परिवर्तन को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा नीति में भी परिवर्तन लाए जाते हैं। विद्यार्थियों को भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों से परिचित कराया जाता है।

आज शिक्षा जगत में वैज्ञानिक संसाधनों के कारण तीव्र गुणात्मक परिवर्तन आया है, जिसमें कम्प्यूटर शिक्षा ने देश–विदेश की दूरियों को मिटा दिया है। ऑनलाइन शिक्षा आज घर बैठे दुनिया के किसी भी कोने में बैठे शिक्षक से प्राप्त की जा सकती है। इन तकनीकी संसाधनों का समाज पर भी प्रभाव दिखाई देता है। समाज के विभिन्न संस्थान आज कम्प्यूटरीकृत प्रणाली को अपनाए जा रहे हैं। इस प्रकार शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन में अन्योन्याश्रय संबंध है। दोनों सहगामी हैं।

शोध के उद्देश्य

1. लोगों के जीवन में शिक्षा की सार्थकता का ऑंकलन किया गया है।
2. लोगों की शिक्षा के विकास में आने वाली समस्याओं का ऑंकलन अध्यायन किया गया है।
3. शिक्षा के कारण लोगों की सामाजिक स्थिति में आये परिवर्तनों की जानकारी प्राप्त की गई है।
4. शिक्षा के कारण लोगों में सामाजिक रूढ़ियों, कुरीतियों एवं धर्मान्धता पर हुए प्रभाव की जानकारी प्राप्त की गई है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध में रखते हुए निम्न पद्धतियों का उपयोग किया गया है

निदर्शन पद्धति

अध्ययन को स्वरूप देने के लिए उद्देश्य परक निदर्शन के अंतर्गत रीवा जिला का चयन किया गया रीवा जिला में शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है

शोध उपकरण

प्रश्नावली

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए रीवा जिले क्षेत्रों में शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन से प्रश्नावली के माध्यम से उनकी राय और विचारों को जानने के प्रयास किए गए हैं तथ्य संकलन के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया है प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में खुला प्रश्न दिया गया जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है

अनुसूची

कुछ प्रतिभागियों को प्रश्नावली समझने में समस्या होने के कारण उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहां अनुसूची के रूप में भी किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकडों का प्रस्तुतिकरण

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन की लोकप्रियता और कार्य पद्धति को केन्द्र में रखकर यह शोध कार्य किया गया है। तथ्यों और आंकड़ों को प्रश्नावली, अनूसूची के माध्यम से एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध रीवा जिले में शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन पर केन्द्रित है। अध्ययन में जिनमे विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। तथ्य संकलन हेतु पचास से अधिक प्रश्नावली, अनुसूची को भरवाया गया है। लेकिन तथ्य विश्लेषण में पचास प्रतिभागियों के मतो को शामिल किया गया है। तथ्य संकलन का कार्य अप्रैल 2022 में किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में कुल 03 प्रश्नो को शामिल किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को अध्ययन हेतु केन्द्र में रखा गया है। साक्षात्कार अनुसूची में विकल्प के रूप मे हॉ, नही और पता नही को तथ्य संकलन हेतु आधार बनाया गया है। जो इस प्रकार है।

तालिका क्र.:– 01

1. **क्या शिक्षा के परिणामस्वरूप लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए हैं?**

क्र.	उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
1.	सजग हुई हैं।	30	60
2.	सजग नहीं हुई हैं।	15	30
3.	नहीं पता।	05	10
	योग	**50**	**100**

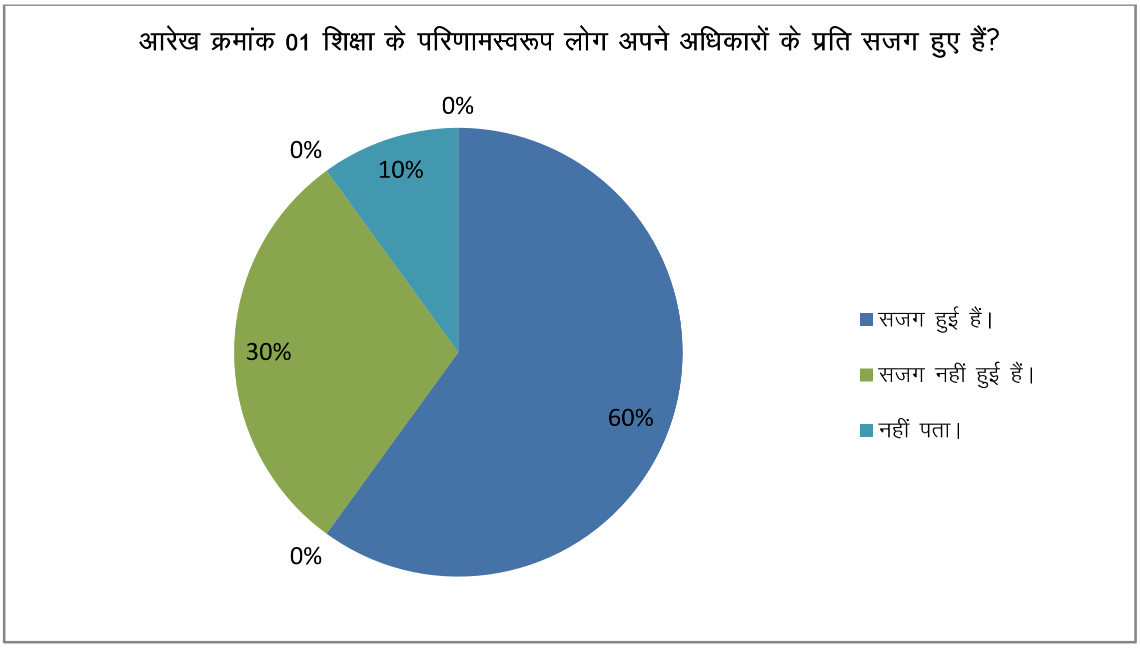

उपरोक्त तालिका–1 में शोध क्षेत्र रीवा जिले के न्यादर्श में चयनित शिक्षा के परिणामस्वरूप लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए हैं की जानकारी हेतु प्रदत्तों का संकलन किया गया है। उपरोक्त तालिका क्रमांक–1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 50 उत्तरदाताओं में से 30 उत्तरदाताओं ने यह माना है, कि शिक्षा के परिणामस्वरूप लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए है। तथा 15 उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा के परिणामस्वरूप लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग नही हुए है। जबकि 05 उत्तरदाताओं ने कहा कि इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है।

इससे यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र की 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना है, कि शिक्षा के परिणामस्वरूप लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए हैं।

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 8, August 2022

तालिका क्र.:– 02

2. क्या शिक्षा के परिणामस्वरूप महिलाएँ आज हर क्षेत्र में पुरूषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं?

क्र.	उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
1.	चल रही हैं।	35	70
2.	नहीं चल रही है।	11	22
3.	नहीं पता	04	08
	योग	50	100

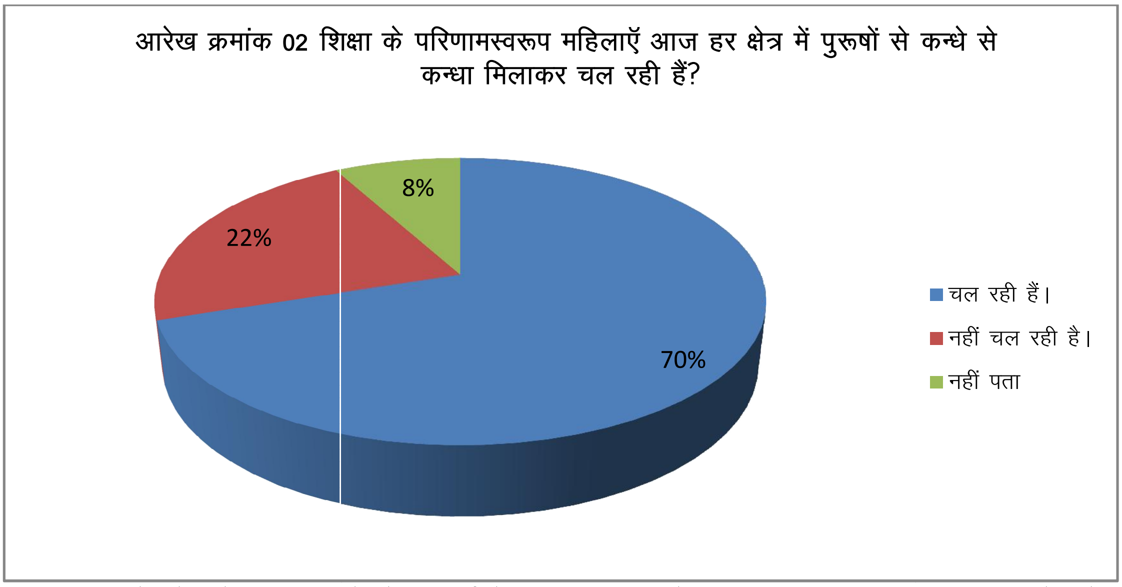

उपरोक्त तालिका–2 में शोध क्षेत्र रीवा जिले के न्यादर्श में चयनित शिक्षा के परिणामस्वरूप महिलाएँ आज हर क्षेत्र में पुरूषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं की जानकारी हेतु प्रदत्तों का संकलन किया गया है। उपरोक्त तालिका क्रमांक–2 के ऑकड़े यह दर्शातें हैं, कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 50 उत्तरदाताओं में से 35 उत्तरदाताओं ने यह माना है, कि शिक्षा के परिणामस्वरूप महिलाएँ आज हर क्षेत्र में पुरूषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। तथा 11 उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा के परिणामस्वरूप महिलाएँ आज हर क्षेत्र में पुरूषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर नही चल रही है। जबकि 04 उत्तरदाताओं ने कहा कि इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है।

इससे यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र की 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना है, कि शिक्षा के परिणामस्वरूप महिलाएँ आज हर क्षेत्र में पुरूषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं।

तालिका क्र.:– 03

3. क्या शिक्षा के कारण महिलाओं एवं वंचित वर्गों की सामाजिक समस्याओं के निदान में सहायता मिली है?

क्र.	उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
1.	सहायता मिली है।	33	66
2.	सहायता नहीं मिली है।	12	24
3.	नहीं पता	05	10
	योग	50	100

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 8, August 2022

आरेख क्रमांक 3 शिक्षा के कारण महिलाओं एवं वंचित वर्गों की सामाजिक समस्याओं के निदान में सहायता मिली है?

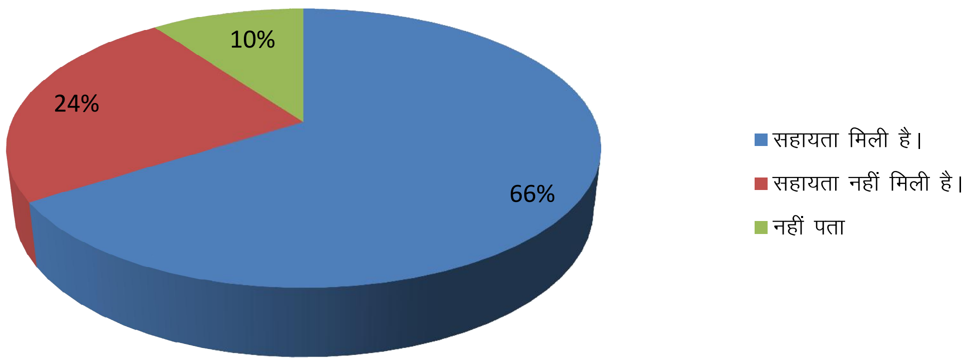

उपरोक्त तालिका–3 में शोध क्षेत्र रीवा जिले के न्यादर्श में चयनित शिक्षा के कारण महिलाओं एवं वंचित वर्गों की सामाजिक समस्याओं के निदान में सहायता मिली है की जानकारी हेतु प्रदत्तों का संकलन किया गया है। उपरोक्त तालिका क्रमांक–3 के ऑकड़े यह दर्शातें हैं, कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 50 उत्तरदाताओं में से 33 उत्तरदाताओं ने यह माना है, कि शिक्षा के कारण महिलाओं एवं वंचित वर्गों की सामाजिक समस्याओं के निदान में सहायता मिली है तथा 12 उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा के कारण महिलाओं एवं वंचित वर्गों की सामाजिक समस्याओं के निदान में सहायता नही मिली है जबकि 05 उत्तरदाताओं ने कहा कि इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है।

इससे यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र की 66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना है, कि शिक्षा के कारण महिलाओं एवं वंचित वर्गों की सामाजिक समस्याओं के निदान में सहायता मिली है।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में यह निष्कर्ष स्पष्ट होता है कि समाज में निरंतर गतिशीलता बनीं रहती है, जो परिवर्तन की ओर इंगित करती है। यह परिवर्तन वातावरण और अवसरों की उपलब्धि से होता है, जिसमें व्यक्ति अपना जीवन श्रेष्ठ प्रकार से व्यतीत कर सके। मानव, समाज में स्वयं को विचारों और कार्यों के माध्यम से व्यक्त करता है। मनुष्य एकाकी जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। उसके भीतर सामाजिकता की सहज प्रवृत्ति होती है। समाज के सामाजिक नियम शिक्षा के द्वारा ग्रहण किये जाते हैं। सामाजिक जीवन अधिकार और कर्तव्य के सिद्धान्त पर आधारित है। सामाजिक नैतिकता की यह पूर्व मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुरूप कार्य करने के लिए तब तक स्वतंत्र है जब तक उसके कार्य दूसरों की स्वतंत्रता में बाधक न हो। व्यक्ति का व्यक्ति से साधारण सम्बंध उसे सामाजिक जीवन जीने के लिये प्रेरित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. सिद्दीकी, एस.ए. (2004)–मध्य प्रदेश सम्पूर्ण अध्ययन, उपकार प्रकाशन, आगरा।
2. Flick, Uwe (1996)- An Introduction to qualitative research, SAGE Publications. London.
3. MHRD (1986)- National Policy of Education, New Delhi.
4. शुक्ल सुरेशचन्द्र एवं कृष्ण कुमार (2008)–शिक्षा का समाजशास्त्रीय संदर्भ, ग्रन्थ शिल्पी, प्रा. लि. लम्मीनगर, नई दिल्ली।
5. अग्रवाल, जे.सी. (1994)– राष्ट्रीय शिक्षा नीति, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. आहूजा, राम (2001) – सोशल प्राब्लम्स इन इण्डिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।